NAME OF THE COLLEGE → Godda college, Godda

SL No	DATE	NAME OF THE TEACHER	SUBJECT	SEM	TOPIC	MODE ADOPTED
01	20.04.2020	Md Mahtab Ahmad	TG-201	B.Ed Sem-02	Group dynamic Process	PDF

M.M. Ahmad
Dept of Education
Godda college, Godda

Scanned by CamScanner

समूह प्रक्रिया : विश्लेषण
(GROUP PROCESS : ANALYSIS)

शिक्षा स्वयं में सामूहिक प्रवृत्ति के लिये है। समूह की प्रक्रिया का विश्लेषण करने में निम्नलिखित तथ्य पर्याप्त सहयोग देते हैं—

(i) सार्थकता—समूह की प्रक्रिया का विश्लेषण करते समय इस बात का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिए कि जिन कक्षाओं में व्यवहार का अध्ययन किया जा रहा हो, वे सार्थक हों।

(ii) द्विइकाई (Dyadic Unit)—विश्लेषण के लिये कम से कम दो व्यक्ति अवश्य हों जो आपस में विचार-विमर्श कर सकें। यह विचार-विमर्श विश्लेषण का आवश्यक अंग है।

(iii) कालक्रम (Temporal Sequence)—समयानुसार समूह की प्रक्रिया में परिवर्तन की प्रकृति कैसी रहती है, इसका भी ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिए।

(iv) दिशा बोध (Knowledge of Direction)—समूह की प्रक्रिया लक्ष्य की ओर किस प्रकार तथा किस गति से अग्रसर होती रहती है, इसकी भी जानकारी होती रहनी चाहिए।

समूह की प्रक्रिया के विश्लेषण में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह किस प्रकार विकसित होती है। इसके विकास में (1) कौन (Whoness) का महत्त्व भुलाया नहीं जा सकता। छोटे समूह में किसने कार्य किया ? यह सरलता से ज्ञात हो जाता है। (2) क्या (Whatness) का महत्त्व संवेगात्मक स्थिति, चिन्तन तथा क्रियान्वयन की ओर संकेत करता है। (3) कब (Whenness) की स्थिति से कालक्रम का महत्त्व प्रकट होता है। यहाँ पर एक बात यह स्पष्ट रहनी चाहिए कि छोटे समूहों में क्रियाशीलता अधिक रहती है। यहाँ पर चार समूहों के सदस्यों की क्रियाशीलता के परिणाम प्रस्तुत हैं जिन्होंने एक निश्चित भाग में सामूहिक क्रियाओं में सहयोग दिया है।

कक्षा : सामूहिक प्रक्रिया
(CLASS : GROUP PROCESS)

कक्षा एक छोटा समूह है। इस समूह में सदस्य संख्या 30-50 के लगभग होती है। विशेष परिस्थितियों में यह संख्या 150 तक देखी गई है। कक्षा समूह में स्थिरता होती है तथा उसकी अपनी विशिष्ट रचना होती है। कक्षा की रचना पर विद्यालय द्वारा निर्धारित नियमों तथा परम्पराओं का प्रभाव पड़ता है। कक्षानायक (Monitor) कक्षा का अधिकारी होता है। कक्षा में सामान्य आयु समूह के बालक होते हैं। इस छोटे समूह में क्रिया संचालन एक क्रिया के तुरन्त पश्चात् होने लगता है। ये क्रियायें आपस में सम्बन्धित होती हैं और इनमें क्षैतिज (Horizontal) तथा लम्बरूप (Vertical) सम्बन्ध होते हैं।

छोटे समूहों में यदि कोई सदस्य किसी प्रकार का उत्तर देता है या अनुक्रिया व्यक्त करता है तो उसे दोहराने की आवश्यकता नहीं है। वह स्थानापन्न क्रिया द्वारा उस उत्तर की पूर्ति कर लेता है। छोटे समूह में क्रिया का उद्देश्य निश्चित है और आपसी विवाद तथा परस्पर विचार-विमर्श के द्वारा लक्ष्य की ओर अग्रसर होने सम्भावना रहती है।

कक्षा को एक समूह मान लेने के पश्चात् यह आवश्यक हो जाता है कि हम यह देखें कि कक्षा रूपी समूह की क्या विशेषताएँ होती हैं—

(i) पूर्व निश्चित उद्देश्य—प्रत्येक कक्षा समूह का निश्चित उद्देश्य होता है। इस उद्देश्य को प्राप्त करना प्रत्येक सदस्य का कर्त्तव्य हो जाता है। कक्षा समूह का उद्देश्य बाह्य शक्तियों, यथा शिक्षा विभाग, विद्यालय, समुदाय तथा समाज द्वारा निर्धारित होता है।

(ii) पाठन प्रक्रिया—प्रत्येक कक्षा समूह अपेन उद्देश्य की प्राप्ति के लिये पठन प्रक्रिया में होकर गुजरता है। पठन प्रक्रिया के अन्तर्गत पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, समय-विभाग चक्र, विद्यालय का वातावरण आदि आते हैं, जिनकी सहायता से उद्देश्य प्राप्त किया जाता है।

Scanned by CamScanner

(iii) उद्देश्य—कक्षा समूह के दो उद्देश्य होते हैं—

(1) व्यक्तिगत (2) सामूहिक

व्यक्तिगत उद्देश्यों के अंतर्गत बालक की सफलता आती है। सामूहिक उद्देश्यों के अंतर्गत कक्षा की सामूहिक लक्ष्य प्राप्ति निहित होती है। इस प्रकार व्यक्तिगत तथा सामूहिक उद्देश्यों के माध्यम से बालक का व्यक्तिगत तथा सामाजिक विकास होता है।

(iv) मूल्यांकन—कक्षा समूह की उपलब्धियों का मूल्यांकन समय-समय पर परीक्षाओं द्वारा किया जाता है। मूल्यांकन द्वारा कक्षा समूह को प्रेरित करके निर्धारित लक्ष्य तक ले जाया जाता है।

(v) सदस्यता—कक्षा समूह के सदस्यों का निर्वाचन उनकी प्रगति, आयु, उपलब्धि तथा विकास क्रम के आधार पर किया जाता है। कक्षा में सदस्य संख्या पूर्व निर्धारित होती है।

(vi) नेतृत्व—कक्षा समूह का एक नेता भी होता है। इस नेता को निर्वाचित भी किया जाता है तथा नियुक्त भी किया जाता है। नेता की नियुक्ति अध्यापक द्वारा होती है। वह कक्षा में अध्यापक की अनुपस्थिति में अनुशासन बनाये रखने के लिये उत्तरदायी होता है।

(vii) ज्ञान प्राप्ति—अध्यापक के मार्ग प्रदर्शन के अंतर्गत कक्षा समूह नवीन ज्ञान प्राप्त करता है और अपने व्यवहार का संशोधन करता है।

(viii) निर्धारित कार्य—कला समूह में अध्यापक तथा छात्रों के कार्यों की भूमिका पूर्व निर्धारित होती है, अध्यापकों को क्या पढ़ाना है ? छात्रों को क्या पढ़ना है ? इसका निश्चय भी बाह्य शक्तियाँ करती हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि समूह प्रक्रिया के माध्यम से केवल कक्षा के प्रतिरूप में ही नहीं अपितु शिक्षा की अन्य क्रियाओं में भी आधारभूत परिवर्तन होते हैं। इसमें अध्यापक का योग चिकित्सक के रूप में रहता है। वह नियन्त्रक, निर्देशक के रूप में छात्रों की अभिवृत्तियों, आचरण तथा अवस्थाओं को विकसित करता है।

इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि जन्म से ही मानव, अधिगम करना आरम्भ कर देता है। इस क्रिया का विकास सामुदायिक सम्पर्क से होता है। विद्यालय में अधिगम की क्रिया सामूहिक परिस्थितियों में होती है। विद्यालय में छात्र-छात्र, छात्र-अध्यापक सम्बन्ध अधिगम की क्रिया को बल देते हैं। आजकल वातावरण तथा सम्पर्क पर बल दिया जाता है। समाज में सामूहिक अधिगम को प्रवाहित करने वाले आधार इस प्रकार हैं—

(i) बालकों के व्यवहार में परिमार्जन सामूहिक परिस्थितियों से होगा। ये परिस्थितियाँ अधिकाधिक संपर्क पर बल देती हैं। जितना अधिक संपर्क होगा, उतना ही अधिक अधिगम होगा।

(ii) सामाजिक तथा संवेगात्मक परिस्थितियाँ अधिगम पर प्रभाव डालती हैं।

(iii) अधिगम की प्रक्रिया पर कक्षा के वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है।

(iv) अधिगम की क्रिया को और भी अधिक सफल बनाने के लिये कक्षा को उपसमूहों में विभक्त किया जा सकता है।

(v) कक्षा को समूह के रूप में कार्य करने के लिये प्रशिक्षण आवश्यक है।

(vi) अध्यापक सामूहिक क्रियाओं द्वारा छात्रों के प्रत्ययों, विचारों, अभिवृत्तियों को परिष्कृत कर सकते हैं।

(vii) समूह की समस्या के समाधान को अध्यापक समूह पद्धति से ही हल कर सकता है।

Scanned by CamScanner